अध्याय 3 महाजनपद काल से शुंग और सातवाहन काल

महाजनपद काल

एक समय था जब जो राजा अपना राज्य जहाँ स्थापित कर देता था उसकी राज्य सीमा उसके अथवा उसके वर्ग के नाम से नाम प्राप्त कर लेती थी। व्यक्तियों या कुलों के कुछ समूहों से प्राप्त ग्राम व ग्रामों के जनपद बने। ईसा पूर्व छठी शताब्दी के पहले से ही कुछ जनपदों ने अपने आस पास के जनपदों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था और महाजनपद का निर्माण किया। इस काल में सोलह महाजनपद आस्तित्व में आ चुके थे। मध्यप्रदेश में चेदि और अवंति महाजनपद थे।

चेदि महाजनपद के अन्तर्गत आज के मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में विस्तारित बुन्देलखण्ड का क्षेत्र आता था। शक्तिमती इसकी राजधानी थी। जातक कथाओं और महाभारत में चेदि नरेशों का उल्लेख मिलता है।

अवंति महाजनपद के अंतर्गत मालवा का क्षेत्र आता था। इसके दो भाग थे। एक उत्तरी अवंति और दूसरा दक्षिण अवंति। उत्तरी अवंति की राजधानी उज्जयिनी थी और दक्षिण अवंति की राजधानी महिष्मति थी जिसे आज महेश्वर के नाम से जाना जाता हैं। विदिशा और एरण इसके प्रमुख नगर थे। पुराणों कें अनुसार महासेन चण्डप्रद्योत यहाँ का शासक था जो बड़ा ही क्रूर था। इतिहासकारों के अनुसार चण्डप्रद्योत के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी अवंति महाजनपद को संभालने में असहाय रहे। फलस्वरूप इसका पतन हो गया। बाद में ये प्रदेश धीरे-धीरे मगध के शिशुनाग और नाग सम्राटों की साम्राज्यवादी नीति के शिकार हुए। बड़वानी के पास मिली नंदो की मुद्राओं को इसका प्रमाण माना जाता है। नंदो के बाद मौर्यों का आधिपत्य रहा।

बौद्धकाल

गौतम बुद्ध के समय उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) अत्यंत महत्वपूर्ण नगरों में एक था। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण जाने वाले राजमार्गों पर उज्जयिनी महत्वपूर्ण विश्राम स्थल था। एक मार्ग पाटलीपुत्र से साकेत, अयोध्या, कौशम्बी, विदिशा और महिष्मति होता हुआ उज्जैन को आता था, और दक्षिण में गोदावरी पर स्थित प्रतिष्ठान तक जाता था। पश्चिम की दिशा में वह मार्ग उज्जैन से भृगुकच्छ (वर्तमान भड़ौंच) तक जाता था। पुराणों में वर्तमान मालवा का अवंति के नाम से उल्लेख आया है। बुद्ध के समय अवंति भारत के चार विशाल साम्राज्यों में से एक माना जाता था। बुद्ध के समय अवंति पर प्रद्योत नाम का राजा राज्य करता था। वह एक पराक्रमी राजा था। अन्य तीन साम्राज्य थे- कोशल, वत्स और मगध।

कहा जाता है कि प्रद्योत का जन्म ठीक उस दिन हुआ था, जिस दिन स्वयं बुद्ध का जन्म हुआ था। वह बुद्ध

के ज्ञान प्राप्ति के समय वह अवंति का शासक बना। बौद्ध साहित्य में प्रद्योत को उसके पराक्रम के कारण 'महासेन' की पदवी से विभूषित किया गया है। प्रद्योत का पड़ोसी, वत्स का राजा उदयन, अवंति के शासक से गरिमा और गौरव में किसी तरह कम न था। एक बार प्रद्योत ने छल पूर्वक उदयन का अपने राज्य में बुलाकर बंदी बना लिया और यह सर्वविदित है कि उदयन प्रद्योत की सर्वगुण सम्पन्न पुत्री, वासवदत्ता, के प्रयत्नों से उसके साथ ही निकल भागा। वासवदत्ता बाद में उदयन की पटरानी बनी। लगभग डेढ़ सौ वर्षों के बाद, प्रद्योत वंश का अंत हो गया, और अवंति, मगध के विशाल साम्राज्य में समाहित हो गया।

तत्पश्चात् पाटलीपुत्र में नंद वंश का राज्य स्थापित हुआ और मध्यप्रदेश का अधिकांश भू-भाग संभवतः उन्हीं के अन्तर्गत रहा। पुराणों में नन्द वंश के संस्थापक, महापद्म नंद को क्षत्रियों का संहार करने के कारण दूसरा परशुराम निरूपित किया गया है।

मौर्य वंश

ईसा पूर्व चौथी सदी में मौर्य वंश ने भारत को राजनैतिक एकता प्रदान की। नंद वंश को हटाकर चन्द्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त एक विशाल साम्राज्य का शासक था। उसके साम्राज्य में उत्तर का सम्पूर्ण भारत आता था। चन्द्रगुप्त का पौत्र, अशोक, भारतीय इतिहास का जाज्वल्यमान नक्षत्र रहा है। अपने पिता बिंदुसार के समय अशोक लगभग 11 वर्षों तक अवंति (मालवा) का शासक रहा। अशोक ने अपना विवाह विदिशा के नगर सेठ की पुत्री देवी से किया। संघमित्रा और महेन्द्र नाम के पुत्री व पुत्र थे। अशोक ने बुद्ध धर्म के प्रचार के लिए उन्हें श्रीलंका भेजा था।

मौर्यों ने यहाँ अवंति नामक प्रांत बनाया जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी। सम्राट अशोक ने उज्जयिनी और निमाड़ अंचल के कसरावद में स्तूपों का निर्माण कराया। रायसेन जिले में साँची और सतना जिले के भरहुत में विश्वप्रसिद्ध स्तूप बनवाए। जबलपुर के निकट रूपनाथ, विदिशा के निकट बेसनगर, पवाया (ग्वालियर), एरण (सागर), गुर्जरा (दतिया) इत्यादि में अशोक के स्तंभ व शिलालेख इस बात का प्रमाण है कि मौर्यवंश का मध्यप्रदेश पर गहरा प्रभाव रहा। यह इस क्षेत्र की शांति व समृद्धि का दौर था।

साँची का स्तूप

शुंग और सातवाहन

अशोक की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी साम्राज्य को बनाए न रख सके। अंतिम मौर्य सम्राट ब्रहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई.पूर्व में की व शुंगवंश की स्थापना की। इस प्रकार मौर्य साम्राज्य का अंत पुष्यमित्र शुंग ने किया।

पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र विदिशा में रहकर अपने साम्राज्य का शासन करता था। विंध्य प्रदेश में भरहुत के शिलालेखों में शुंगवंश का उल्लेख आया है, जिनसे प्रमाणित होता है कि यह क्षेत्र उनके साम्राज्य के अंतर्गत थे।

कालीदास की रचना मालविकाअग्निमित्र के अनुसार शुंग वैम्विक वंश के थे। बौद्धायन श्रोत सूत्र के अनुसार वैम्विक कश्यप गौत्रिय ब्रम्हण थे हरिवंश पुराण से भी इसकी पुष्टि होती है। हर्ष चरित के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण राजा था। उसने साँची के स्तूप का आकार बढ़ाया तथा वेदिका स्थापित की। इसी समय भरहुत के स्तूप की चारदिवारी व तोरण द्वार का निर्माण भी हुआ।

शुंगों के बाद दक्षिण से आए **सातवाहन वंश** ने मालवा में प्रवेश किया। सातवाहनों ने भी त्रिपुरी, विदिशा आदि पर शासन किया। उनके सिक्के होशंगाबाद व जबलपुर के पास प्राप्त हुए हैं। पुलुमावि के नासिक गुफा अभिलेख में अवंति और महिष्मति क्षेत्र विंध्य और सतपुड़ा आदि स्थानों का उल्लेख सातवाहन साम्राज्य के अंतर्गत किया गया है। जिससे प्रमाणित होता है कि नर्मदा तक का क्षेत्र सातवाहनों के प्रभाव में था।

नागवंश

ग्वालियर के आस-पास के क्षेत्र में ऐतिहासिक नगर पद्मावती, जो कि आज पवाया के नाम से जाना जाता है, यह पहली शताब्दी ई. के प्रारंभ में नागवंशीय राजाओं की राजधानी थी। पवाया में नौ नाग राजाओं द्वारा राज्य करने का उल्लेख मिलता है। उनके समय के अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं। ग्वालियर और पश्चिम बुन्देलखण्ड का अधिकांश भाग इस राज्य के अंतर्गत था। पुराणों में विदिशा में भी नौ शताब्दियों तक नाग राजाओं द्वारा राज किए जाने का उल्लेख मिलता है।

शक व कार्दमक

क्षहराता वंश के शक क्षत्रप, द्वितीय शताब्दी ई. में मालवा, गुजरात और काठियावाड आदि पश्चिमी भारत के क्षेत्रों में शक्ति हथिया बैठे परन्तु सातवाहन वंश के गौतमी पुत्र सातकर्णी ने शकों की शक्ति का दमन किया। क्षत्रपों की दूसरी शाखा का नाम कार्दमक था, जिनकी राजधानी उज्जैन थी। शीघ्र ही कार्दमक वंश के संस्थापक चष्टन के नेतृत्व में नए राज्य का उदय हुआ। उसने सातवाहनों से नर्मदा के उत्तर के भू-भाग वापिस छीन लिए, जो कि सातवाहनों ने नहपान से छीन लिए थे। चष्टन के सिक्के उज्जैन, विदिशा तथा शिवपुरी में प्राप्त हुए हैं। चष्टन का पौत्र, रुद्रदामन, बड़ा प्रतापी राजा हुआ। उस समय में पूर्वी तथा पश्चिमी मालवा (आकर तथा अवंति) उसके शासन में रहे। रूद्रदामन के उत्तराधिकारियों के सिक्के मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न-1 नंदों के बाद ..... का आधिपत्य रहा।

प्रश्न-2 महाजनपद काल में ..... महाजनपद अस्तित्व में आ चुके थे।

प्रश्न-3 बौद्ध साहित्य में प्रद्योत को उसके पराक्रम के कारण .....की पदवी से विभूषित किया गया।

प्रश्न-4 अशोक ने बुद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र ..... एवं पुत्री .....को श्रीलंका भेजा।

प्रश्न-2 लघुउत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न-1 मध्यप्रदेश में कौन-कौन से महाजनपद थे एवं उनका विस्तार कहाँ तक था, लिखिए।

प्रश्न-2 बुद्धकाल में भारत में कौन से प्रमुख साम्राज्य थे व मध्यप्रदेश से संबंधित कौन-सा साम्राज्य था?

प्रश्न-3 मौर्यकाल में मध्यप्रदेश का महत्व समझाइए।

प्रश्न-4 शुंग शासक काल के प्रदेश में कौन-से प्रमाण प्राप्त हैं?

प्रश्न-5 प्रदेश में नाग शासकों का राज्य कहाँ था?

प्रश्न-6 कार्दमक वंश के सिक्के कहाँ-कहाँ प्राप्त हुए हैं?